



लक्ष्मी सीड्स

चना की फसल का अधिक उत्पादन हेतु सुझाव





लक्ष्मी सीड्स

रिसर्च किस्म

GNG-1581



खेत का चुनाव व तैयारी

चना हल्की व भारी दोनो प्रकार की भूमि में उगाया जा सकता है। परन्तु लवणीय एवं क्षारीय भूमि जहां जल निकास की समस्या है, चने की फसल के लिए उपयुक्त नहीं है।
मध्यम व भारी मिट्टी के खेतों में एक या दो जुताई करे।



बुवाई का समय एवं बुवाई की विधि

चने की बुवाई 20 अक्टूबर से 15 नवम्बर तक कर सकते हैं। चने की देर से बुवाई 25 नवम्बर तक कर सकते हैं। बुवाई के लिए कतार से कतार की दूरी 30 सेमी. व बीज की गहराई 7-8 सेमी. रखें।



बीज की मात्रा व बीज उपचार

चने का बीज 22-25 किलो प्रति एकड़ की दर से बोयें। मोटे दाने वाली किस्म 25-30 किलो प्रति एकड़ बीज समय पर बुवाई करें। देरी से बिजाई के लिए 30-33 किलो प्रति एकड़ की दर से बोयें। जड़ गलन व उखेड़ा की रोकथाम हेतु बुवाई से पहले बीज को 10 ग्राम ट्राईकोडरमा हरजिनेयम (पाउडर आधारित) या 1.5 ग्राम कार्बेन्डेजिम (50 डब्ल्यू.पी.) या 2.5 ग्राम कार्बेन्डेजिम (25 एस.डी.) प्रति किलो के हिसाब से उपचारित करें।



खाद एवं उर्वरक

चने की अच्छी पैदावार के लिए 8 किलो फॉस्फोरस प्रति एकड़ की दर से बीज बोने से पहले डालें। बारानी क्षेत्रों में उपरोक्त की आधी मात्रा बुवाई से पहले डालें।



खरपतवार नियंत्रण एवं निराई-गुड़ाई

बिजाई के 5-6 सप्ताह बाद तक निराई-गुड़ाई अवश्य करें। सिंचित चने में सिंचाई के बाद बत्तर आने पर एक निराई-गुड़ाई करें।



सिंचाई

प्रथम सिंचाई बिजाई के 50-55 दिन बाद (शाखा बनने के समय), दूसरी सिंचाई अगर आवश्यकता हो तो बुवाई के 100 दिन बाद दें। अगर एक ही सिंचाई देनी हो बुवाई के 60-65 दिन बाद दें।



कटाई

फसल को ठीक समय पर कटाई करना आवश्यक है। अधिक देरी करने से फलियां झड़ने का भय रहता है। अधिकतर फलियां पक जाये तो फसल की कटाई कर लेनी चाहिये।



कृपया ध्यान दें

ऊपर दी गई सलाह हमारे अनुभव, फ़िल्ड डेमोंस्ट्रेशन और हमारे रिसर्च सेंटर्स में किए गए प्रयोगों पर आधारित है। मौसम, मिट्टी के प्रकार और खेती की खास स्थितियों जैसे कारकों के कारण नतीजे अलग-अलग हो सकते हैं। हम केवल उपज की गुणवत्ता की गारंटी दे सकते हैं। क्योंकि अन्य कारक हमारे नियंत्रण से बाहर हैं। यहाँ दी गई जानकारी का उद्देश्य किसानों की खुशी और सफलता सुनिश्चित करना है।

